यह एक ऐसा प्रश्न है जो लोग अक्सर सच्ची जिज्ञासा या चिंता के कारण पूछते हैं। बहुत से लोग सोचते हैं:

“अगर परमेश्वर सब कुछ का मालिक है और वह समृद्ध है, तो उसके इतने लोग गरीब क्यों हैं?”

ऊपर-ऊपर से देखें तो यह प्रश्न उचित लगता है। क्योंकि बाइबल में लिखा है:

“यह सेनाओं के यहोवा का वचन है कि चाँदी मेरी है और सोना भी मेरा है।”
(हाग्गै 2:8)

तो क्या उसकी प्रजा को भी उसी समृद्धि को नहीं दिखाना चाहिए?

लेकिन जब हम दुनिया को व्यापक रूप से देखते हैं, तो पता चलता है कि गरीबी केवल मसीहियों में ही नहीं है। वास्तव में, दुनिया के ज़्यादातर लोग—उनके धर्म से परे—धनवान नहीं हैं। चाहे देश मसीही हों, मुस्लिम हों, हिंदू, बौद्ध, या फिर नास्तिक—हर जगह स्थिति लगभग एक जैसी है:

धनवान कम होते हैं, जबकि मध्यम वर्ग और गरीब अधिक होते हैं।

यीशु ने भी इस सच्चाई को स्वीकारते हुए कहा था:

“क्योंकि गरीब तो सदैव तुम्हारे साथ रहते हैं…”
(मत्ती 26:11)

यह कोई श्राप नहीं, बल्कि इस टूटे हुए संसार की व्यवस्था का तथ्य है।

इसलिए, जब हम पूछते हैं कि मसीही गरीब क्यों हैं, तो हमें यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि गरीबी असफलता का संकेत है, या धन आध्यात्मिक श्रेष्ठता का प्रमाण।

बाइबल धन के बारे में क्या कहती है?

बाइबल यह वादा नहीं करती कि हर विश्वासी धनी होगा। वह हमें सिखाती है कि सच्ची और सबसे कीमती सम्पत्ति आत्मिक आशीषें हैं। जैसा कि इफिसियों 1:3 में लिखा है:

“हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की स्तुति हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर प्रकार की आत्मिक आशीष दी है।”

परमेश्वर हमारी अस्थायी दौलत से ज़्यादा हमारी अनन्त विरासत की परवाह करता है।

यीशु ने भी चेतावनी दी कि धन का धोखा इंसान के जीवन में वचन को दबा सकता है।
(मत्ती 13:22)

और उसने कहा:

“सावधान रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो, क्योंकि मनुष्य का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत पर
निर्भर नहीं करता।”
(लूका 12:15)

इसका मतलब यह नहीं कि परमेश्वर समृद्धि के विरोध में है। वह

हमारी आवश्यकताएँ पूरी करता है
(फिलिप्पियों 4:19)
और अपने बच्चों को आशीष देना उसे अच्छा लगता है। लेकिन साथ ही वह हमें संतोष सिखाता है:

“पर भक्ति के साथ संतोष ही बड़ा लाभ है।”
(1 तीमुथियुस 6:6)

तो फिर इतने मसीही गरीब क्यों हैं?

इसके कई कारण हो सकते हैं:

1. आत्मिक परिपक्वता

कुछ विश्वासी अभी भी विश्वास, समझ और वित्तीय बुद्धिमत्ता में बढ़ रहे हैं।

2. परमेश्वर का उद्देश्य

कभी-कभी परमेश्वर हमारे चरित्र और विश्वास को मजबूत करने के लिए आर्थिक संघर्ष की अनुमति देता है।

(याकूब 1:2–4)

3. संसार की व्यवस्था

हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ आर्थिक असमानता, भ्रष्टाचार और अन्याय भरा है।

4. गलत शिक्षाएँ और अपेक्षाएँ

कुछ लोगों को गलत सिखाया जाता है कि विश्वास का अर्थ स्वतः ही धनवान होना है। लेकिन पौलुस कहता है:

“मैं दीन होना भी जानता हूँ, और प्रचुरता में रहना भी जानता हूँ…”
(फिलिप्पियों 4:12)

सार यह है कि मसीही धर्म भौतिक धन का वादा नहीं करता, बल्कि इससे कहीं अधिक अनमोल चीजें देता है:

परमेश्वर की शांति, दुःखों में भी आनन्द, जीवन का उद्देश्य,
और वह अनन्त सम्पत्ति जो कभी नष्ट नहीं होती।

(मत्ती 6:19–21)

क्या मसीही धर्म धन की गारंटी देता है?

नहीं।
लेकिन यह उससे कहीं अधिक मूल्यवान चीज की गारंटी देता है— परमेश्वर के साथ जीवित संबंध।
जो आपको पहचान, मूल्य और उद्देश्य देता है, चाहे आपके पास बहुत कुछ हो या बहुत कम।

सच्ची सम्पत्ति मसीह में है — किसी बैंक खाते में नहीं।

जैसा कि लिखा है:

“वह धनवान होते हुए भी तुम्हारे कारण निर्धन बन गया, ताकि उसकी निर्धनता से तुम धनवान बन जाओ।”
(2 कुरिन्थियों 8:9)

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□?

Share on:
WhatsApp